# बिखरते लम्हें

नेहा चौधरी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**
India | U.K.

Copyright © Neha Chaudhary 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+98882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-111-5

Cover design: Daksh

Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: January 2026

ये पुस्तक मेरी माँ को समर्पित है जिन्होंने हर परिस्थिति मे मेरा साथ

दिया और मेरा साहस बनी ॥

धन्यवाद माँ

# भूमिका

नमस्कार, आशा है आप सभी खुश होंगे, और आगे बढ़ रहे होंगे, आज मैं आपको जीवन से जुड़े

कुछ सुख दुख भरे पलों से मिलवाऊँगी, ये तो हम सब जानते हैं की जीवन बहुत ही परिवर्तनशील है,

आज अगर दुख है तो कल सुख भी जरूर होगा, जैसे रात के बाद दिन निकलता है बैसे ही

परिस्थिति बदलती रहती है, लोग भी बदलते है, रिश्ते नाते, बदलाव हर जगह होता है॥

प्रकृति  मे कुछ भी निश्चित नहीं है हमारा जीवन भी, जीवन से जुड़े सारे सत्य और असत्य सब

कुछ बदलता रहता है

यही कारण है की हम कभी कभी बहुत ज्यादा दुख पाते हैं और

भूल जाते हैं की समय है,

बदलेगा जरूर और अपने भाग्य को कोसने लगते है, पर ऐसा नहीं होता है अगर आज आप दुखी हैं तो

एक न एक दिन सुखी भी जरूर होंगे बस, धैर्य की जरूरत है ॥

मैंने अपनी इस पुस्तक मे जीवन से जुड़े बहुत सारे तथ्य लिखे हैं जो हम जानते तो हैं परंतु

अनदेखा कर देते हैं, और जाने अनजाने मे हम खुद को और अपने से जुड़े लोगों को भी

कष्ट पहुचा देते हैं, इस किताब का एक एक शब्द किसी न किसी के जीवन से जुड़ा है शायद

आपके जीवन की कहानी भी कहीं न कहीं आपको मिल ही जाएगी मैंने इस किताब को पूरे दिल

से महसूस किया है, आशा करती हूँ आप लोग भी इसे महसूस कर पाएंगे और जीवन से जुड़े

बहुत सारे सवालों के जबाब भी आपको यहाँ मिल जायेगें,

हो सकता सवाल बढ़ भी जाए, इस लिए इस पुस्तक का एक भी

प्रस्ठ स्किप न करे,

आशा करती हूँ आपको ये पुस्तक कुछ अपनापन महसूस करबाएगी ।।।।

सप्रेम,

नेहा चौधरी

*“परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है”*

# अनुक्रम

मैं कहने से डरती हूं.......................................................................... 1

काश जिंदगी चलती हमारे हिसाब से ................................................ 3

अजीब दास्तां है जिंदगी की ............................................................ 4

आशाएं................................................................................................ 5

आँखों में आज फिर ,कुछ नमी सी हो गयी है...................................... 7

कुछ अपनें दिल की, बयां तो करो....................................................... 9

क्या कहूं, इस जिंदगी के बारे में ...................................................... 10

ऐ जिंदगी किस राह पर ले आयी है................................................... 11

करीब से देखा था उसे ....................................................................... 12

जिंदगी मेरी कहर ढा रही है.... ........................................................ 13

ये जिंदगी का सफर, मेरी समझ नहीं आता ...................................... 14

मेरे अस्तित्व पर सवाल आया है.. ..................................................... 15

बोलती कुछ नहीं ............................................................................... 16

संस्कार: मैं रोना चाहती थी, ........................................................... 18

चल फिर से जी ले बो पल.................................................................. 20

दिल दिमाग़ की कहानी...................................................................... 22

बो दिन आज भी याद आये. ............................................................... 23

उसके बिना हम कुछ नहीं....... ........................................................ 24

बो चला गया........................................................................................ 25

दिन ढलते गए.................................................................................... 26

शैतान ........................................................................................ 27

बचपन कितना प्यारा था ............................................................... 28

क्या खोया क्या पाया.................................................................... 29

चलो कुछ पल जी लेते हैं................................................................ 30

मुझे मनाना नहीं आता ................................................................... 32

तोड़ जंजीरे मिटा सब फासले...... ................................................. 33

राज सबके यहाँ गहरे हैं...... .......................................................... 35

कैसे बयां ना करुं उन पलों को........................................................ 36

मृत्यु कब से मुझे बुला रही है...... ................................................ 37

मैं हर दिन चोट खा रही हूँ............................................................ 38

एक बार पूछ कर तो देखो ............................................................. 40

मैं इतनी अजीब क्यों हूँ ................................................................ 42

क्या मेरी पहचान है ..................................................................... 43

कोशिश की होती तो शायद ........................................................... 45

तू कभी न डरना .......................................................................... 47

मैं पल पल बिखर रही हूँ................................................................ 49

क्या सच मे बो समझ पाया ........................................................... 50

बो आगन हो गया पराया............................................................... 51

उसने जख्म इतने गहरे दिए........................................................... 52

क्या सारे नियम बस मेरे लिए........................................................ 53

मैं थी तो आज भी बंदिनी ............................................................ 54

काश तुमने मुझे समझा होता......................................................... 56

उजाड़ने वाले तो अपने है ........................................................ 57
मैंने भी एक सपना देखा था ...................................................... 58
मैं बस तेरे प्रेम की दीवानी हूँ.................................................... 59
क्या करूं ...................................................................... 60
क्यों इस तरह मैं चुप रह जाती हूँ.................................................. 61
हर कोई अच्छे की तलाश में है .................................................. 62
"क्यों" ....................................................................... 63
थोड़ा थोड़ा मुस्कराते हैं........................................................ 64

# मैं कहने से डरती हूं

मैं कहने से डरती हूं
घुट घुट के मरती हूं
ऐ खुदा तूने दी ऐसी जिंदगी
जिसे मर मर के जीती हूं।
तूने दुनियां बनायीं मेरे लिए
पर अपना अस्तित्व ढूढती हूं।
मैं कहने से डरती हूं।
हाँ हक़ बहुत दिए हैँ मुझे,
पर मेरे सारे हकों को छीनकर
जब पैदा हुई तो शोक हुआ,
बेटी है साहब बेटी

इस बात का प्रलाप हुआ।
बड़ी हुई तो मज़बूरी बनी
हाथों को पीले करने का ढोंग हुआ।
ये लड़की नहीं गाये है
ऐसे शब्दों का गान सुना।
बो सच ही तो कह गए चचा,
एक खूटे से खोल दिया
और दूजे में बाँध दिया।
फिर बड़े प्यार से बोले
ये है हमारी रानी बिटिया।
अब बस इतना बता मुझे
जिसने जैसे चाहा
वैसे जीवन को ढाला
मैंने क्या क्या सहा,
ये कब किसने जाना।
अब विनती बस खुदा से
इतनी सी करती हूं
बेटियां मत भेज,
मैं बेटी होकर डरती हूं।

# काश जिंदगी चलती हमारे हिसाब से

काश जिंदगी चलती हमारे हिसाब से
तो कभी किसी के आँखो में आंसू ना आते
हर पल हर लम्हे कटते, हँसते मुस्कुराते
हर किसी के नसीब में होती खुशियाँ
फिर कोई अपनी लकीरो को देख ना रोते
काश जिंदगी चलती हमारे हिसाब से
तो कभी किसी के आँखो मे आंसू ना आते.......
आखिर खुशियों पर हक़ तो सबका है,
पर उसकी कलम का लेखा भी अनोखा है
किसी का घर खुशियों से भरा है
तो किसी का गमों से घिरा है
काश ऊपर बाले भी समानता अपनाते
तो लकीरों को एक समान ही बनाते
काश जिंदगी चलती हमारे हिसाब से
तो कभी किसी के आखों में आंसू ना आते.......

# अजीब दास्तां है जिंदगी की

अजीब दास्तां है जिंदगी की
रोने को मन करे फिर भी मुस्कराते हैँ
हम ख़ुश हैँ ये सबको बताते हैं
अंदर ही अंदर टूट से गए हैं
फिर भी महफिलों में थट्टे लगाते हैं
है मंजर कुछ ऐसा जिंदगी का
हजारों की भीड़ में, खुद को अकेला पाते हैं
ये जिंदगी के फंडे कुछ समझ नहीं आते हैं......
हैं लाख बुराइयाँ मुझमें शायद
क्या बो लोग अच्छे हैं जो हमको बुरा बताते हैं
हर जगह ताने मिले हमें
और गलतियों को हमारी सरहाते हैं
कभी झांको अपनें जीवन में भी
बुराईयां हर जगह नजर आती हैं
अच्छा तो सबको अच्छा लगता हैं
अपनें तो बो होते हैं, जो बुराइयाँ भी अपनाते हैं
ये जिंदगी के फंडे कुछ समझ नहीं आते हैं.......

# आशाएं

मत रख आशाएं ऐ दिल ,
क्यूँ गमों को बुलाएगा
जब बदलेंगी आशाएं, निराशा में
तू कुछ ना समझ पायेगा
हर बक़्त हर घड़ी कम पड़ जायेगा
जब आशाओं में निराशा को पायेगा
मत रख आशाएं ऐ दिल,
क्यूँ गमों को बुलाएगा..........
मैंने पल पल लोगों को मरते देखा है
मैंने पल पल लोगों को बदलते देखा है
धोखा दिया है अपनों ने अपनों को

अब इनसे क्या खुशियाँ पायेगा
मत रख आशाएं ऐ दिल,
क्यूँ गमों को बुलाएगा.......
तू बाँट इतनी खुशियाँ ,
जितने तारे आसमां में,
और बनना तू चन्द्रमा,
जो रौशनी कर दे निशा में
जब बात आये आशाओं की
ऐ दिल, तू सूरज से प्रेरणा लेना
मत रखना आशाएं किसी से
चाहें स्वयं जलन सह लेना
अब भूल जा पुरानी बातों को,
तू ख़ुश रहके दिखलाएगा
मत रख आशाएं ऐ दिल,
क्यूँ गमों को बुलाएगा..........

# आँखों में आज फिर ,कुछ नमी सी हो गयी है

थी चहल पहल जिंदगी में कभी
आज गुमसुम सी हो गयी है
ना जाने जिंदगी किस ओर मुड़ गयी है
आँखों में आज फिर,नमी सी हो गयी है
चिड़ियों की चहचहाहट थी,
खुशबु थी गुलाब सी
अब बन गयी है जिंदगी ये,
एक अनसुलझी किताब सी
मैं लगी हूँ सुलझाने को
कुछ हड़बड़ी सी हो गयी है
आँखों में आज फिर,
कुछ नमी सी हो गयी है......
याद आते हैं पुराने दिन
कुछ खट्टे कुछ मीठे
याद आते हैं अपने
कुछ हँसते कुछ रुठे
आज मेरे अपनों की
कमी सी हो गयी है
आँखों में आज फिर

कुछ नमी सी हो गयी है........

सुख दुख तो साथी हैं जीवन के
गमों की तो आदत सी हो गयी है
मैं अब मुस्कराहट ढूंढती हूँ
मुस्कराने की आदत सी हो गयी है
आँखों में आज फिर ,
कुछ नमी सी हो गयी है

# कुछ अपनें दिल की, बयां तो करो.

हर दिन जिंदगी में, कुछ नया तो करो
कुछ अपनें दिल की, बातें बयां तो करो......
कुछ तुम कहो, कुछ मेरी भी सुनो
कुछ अपनें दिल की, बातें बयां तो करो.........
जब मैं रोऊँ तो,सहूलियत तो बनो
कभी मेरे लिए मेरी, मुस्कान तो बनो
कभी मेरे बारे में, तो कभी अपनें बारे में
कुछ गुफ़्तगू तो करो
कुछ अपनें दिल की,बातें बयां तो करो.............
हर वक़्त ,हर लम्हा
मुस्कराते रहो
ऐ मेरे प्यारे दिल
बस इतनी सी ख्वाहिश
पूरी तुम कर दो
कुछ अपनें दिल की
बातें बयां तो करो..........

# क्या कहूं, इस जिंदगी के बारे में

क्या कहूं इस जिंदगी के बारे में
ये तो ढलती जा रही है, आँसुओं के किनारे में
हर दिन कुछ नया सिखा रही है
ये जिंदगी, किस तरह कहर ढा रही है
लोग लगे हैं, पैसा कमाने में
मैं ढूंढ रही हूँ हर दिन, खुशियाँ इस ज़माने में
क्या कहूं इस जिंदगी के बारे में
हर सुबह सूरज को मनाती हूँ
देर मत करना चाँद को लाने में
थोड़ा मुस्कुरा देती हूँ, लगी हूँ आंसू छुपाने में
मैं ढूंढ़ती हूँ अपनों को, इस बेगाने ज़माने में
क्या कहूं इस जिंदगी के बारे में
हर दिन एक सबक सिखाता है
बीता हुआ कल वापस नहीं आता है
क्यूँ गुजारे अपना आज, बीती यादों में
चल कोशिश करते हैं
आज को खुशहाल बनाने में
क्या कहूं, इस जिंदगी के बारे में

# ऐ जिंदगी किस राह पर ले आयी है........

ऐ जिंदगी, किस राह पर ले आयी है
कहीं कांटे बिछे हैं, तो कहीं खायी है
हाँ हूँ मैं मजबूर, हूँ अपनों से दूर
ठोंकर भी मैंने, अपनों से खाई है
गमों को मैंने गले से लगाया है
ठोंकरों से मैंने, खुद को संभाला है
ऐ जिंदगी क्यूँ इतनी तन्हाई है
ऐ जिंदगी किस राह पर ले आयी है......
मुझे गिला नहीं है किसी से
आँसुओं की बरसात,
अपनों ने ही बरसाई है
ऐ जिंदगी किस राह पर ले आयी है......
ना पता था की, जहर अपनें भी देते हैं
ना पता था की, दुश्मन अपनें भी होते हैं
इस तरफ खाई, और उस तरफ भी खाई है
ऐ जिंदगी किस राह पर ले आयी है........

# करीब से देखा था उसे

आज पहली बार, करीब से देखा था उसे
उसके चेहरे पर एक, अजीब सी मुस्कान थी
हंस के कह रही थी, जा रही हूँ मैं,
जैसे पहले से पहचान थी।
बड़ा अजीब सा मंजर था
सामने समंदर था,
वो लहरों में खो गयी, मन मेरा डुवो गयी,
दिल जोर से धड़कने लगा
मन मेरा मुझसे कहने लगा
थाम ले हाथ उसका अभी भी
वो दूर तुझसे जा रही, वो दूर तुझसे जा रही.......
एक पल में होश आया, खुद को रेत में पाया
आँखे खुली की खुली रह गयी
क्यूंकि सामने बही खड़ी थी
वो फिर मुस्कुराई, अजीब सी आंधी आयी,
अंधेरा सा छा गया, दिल फिर से घबरा गया
कहके अलविदा मुझे,वो जा चुकी थी दूर कही
वो संसार से बिदा ले गयी...........
हमेशा के लिए धूमिल हो गयी।

# जिंदगी मेरी कहर ढा रही है....

जिंदगी मेरी कहर ढा रही है.....
बढ़ते कदम रुक से गए हैं
जीवन से हम डर से गए हैं
चाहते हैं जिंदगी खुशी से जीयें
पर अपनों के जख्म बढ़ से गए हैं
वक़्त की मार कुछ ऐसे पड़ी है
मुस्कुराहट अब गुम सी हो गयी है
मैं ढूंढूँ बहाना गर मुस्कुराने का
आँसुओं का ठेका है, मुझे रुलाने का
जिंदगी की डोर, कमजोर हो गयी है
जिंदगी मेरी कहर ढा रही है....
दिल की तमन्ना पूरी करूँगी
अपनों को अपना बनाकर रहूंगी
चाहें जख्म है मिले जिंदगी से मुझे
फिर भी, मैं फूलों की बौछार करूँगी
जिंदगी की खुशियाँ कहीं खो गयी हैं
जिंदगी मेरी कहर ढा रही है....

# ये जिंदगी का सफर, मेरी समझ नहीं आता

कुछ सोचो कुछ हो जाता है
ये जिंदगी का सफर,
मुझे समझ नहीं आता है......
जब बारी हँसने की हो
तो आंसू आँख दिखाता है
ये जिंदगी का सफर,
मुझे समझ नहीं आता है......
हम बनाते हैं उसूल बहुत सारे,
जिंदगी चलती भाग्य के सहारे
भाग्य हँस के दाँत दिखाता है
ये जिंदगी का सफर
मेरी समझ नहीं आता है......
जो दिल के पास होते हैं
बो अक्सर दूर रहते हैं
जिनसे कोई वास्ता नहीं
बो अक्सर साथ चलते हैं
ये रिश्तों का भंवर, मुझे डुबो जाता है
ये जिंदगी का सफर, मेरी समझ नहीं आता है.......

# मेरे अस्तित्व पर सवाल आया है..

माँ आज उसने फिर मुझे पैसे से तोला है
मेरे अस्तित्व को आज फिर झकझोरा है
बात बात पर धमकी देता है वो
कहता है चली जा अपने घर, जो तेरा हो।
बता ना, मैं कौन से घर जाऊं
माँ, मैं किसे अपना बताऊं......
उस घर को जिसमे गालियों से होता है स्वागत
या उसे, जो नहीं है मेरा, परंपरागत
माँ बता ना, मैं कैसे अपना अस्तित्व बनाऊ....
तूने हाथों को पीला करके, भेज दिया ऐसे
हूँ पहाड़, मैं तेरे ऊपर जैसे
माँ उसने फिर वही दोहराया है
माँ मेरे अस्तित्व पर सवाल आया है।
माँ मेरे अस्तित्व पर सवाल आया है.............

# बोलती कुछ नहीं

वो सब देखती है, वो सब समझती है।

शायद महसूस भी करती है,

पर बोलती कुछ नहीं...

सबको सुनती है, रोती है, हंसती भी है।

उसे चोट भी लगती है, आंसुओ के घूंट पी जाती है

पर बोलती कुछ नहीं........

कोई कुछ भी बोले , कभी जबाब नहीं देती।

बस मुस्करा देती है, शायद कहना चाहती हो,

पर सहम के रह जाती है l

मन की इच्छाओ को दबा देती है,
पर बोलती कुछ नहीं........
वो दोस्त बनाना चाहती है,
पर बनाया नहीं कोई।
इच्छाएं उसकी रह गयी, सोइ सोई
वो गुनगुनाना चाहती है
पर मूक हो गयी , बेटी है वो.....
बोलती कुछ नहीं।

# संस्कार: मैं रोना चाहती थी.

वो करता रहा वार, मेरी आत्मा पर
फिर भी मुस्कुराना मेरी किस्मत है........
उसने जख्मों पे जख्म दिए हैं मुझे
दिल के टुकड़े मेरे कई बार किये
सपने देखे थे मैंने जिसके लिए
उसने नफरत के बोल सिखाये मुझे
मैं जकड़ी रही संस्कारों में,
बहु बनके आई, इज्जतदारों में
जीना मुश्किल मेरा, बो करता गया
फिर भी मुस्कुराना मेरी किस्मत है.........
जी भर के रोने को दिल ने कहा
पर जकड़ा मुझे संस्कारों ने
आँख समुन्दर सी मेरी भरी रह गयी
आत्मा अंदर से मर गयी
एक बूँद भी आंसू गिरा ना सकी
घुट घुट के रोने को, मैं मजबूर हुई
माँ ने किस्मत का मुझको दिलासा दिया
संस्कारों का पाठ, फिर सुना दिया
मैं रोना चाहती थी,

फिर भी मुस्कुराना मेरी किस्मत है...........
है बहुत ही गिले, जिंदगी से मुझे
सारे रिश्ते नाते मुझी से बने
कहीं बेटी बनी, तो माँ मैं कहीं
बेटी बनके पापा की इज्जत बनी
सारे दर्दो को माँ बनके पी गयी
क्या सारे दर्द बस मेरे लिए।
मैं कहना चाहती थी
फिर भी चुप रहना मेरी किस्मत है
मैं रोना चाहती थी
फिर भी मुस्कुराना मेरी किस्मत है.............

# चल फिर से जी ले बो पल

चल फिर से जी लें बो पल
मैं चाये पियूँ तेरे हाथों की
तू दीवानी हो मेरी बातों की
हर दिन की तरह तू मुस्काये
मेरे लिए तू, खाना बनाये
और बात करें उन यादों की
और बात करें उन यादों की ।
जब देखा था, पहली बार तुझे
एक नया सा जीवन मिला मुझे
तूने इतनी खुशियाँ, दी थी मुझे
हर एक पल को, नया बनाये चल
चल फिर से जी लें बो पल ॥
बो छोटे छोटे झगड़े, बो बच्चों के रगड़े
चल सबको आज भुलाये चल
हम दूर कहीं, चले जाएँ चल
बस तू हो बहां और मैं भी होऊं
तू हंसती रहे मेरे जीवन में
मैं सदा सदा तेरे साथ रहूं
एक पल ना जुदा तुझसे होऊं

एक पल ना जुदा तुझसे होऊं।
एक नया घर बनाये चल
चल दूर कहीं चले जाएँ चल।
एक छोटा सा आसियाना बनाये चल
बहां खुशिओं को बांध के लाएं चल
इन गमों को जिंदगी से भगाएं चल
अपनी बढ़ती उमर को भुलायें चल
चल फिर से जी लें बो पल।
तू हर दिन गुनगुनाना मेरे लिए
मैं गजल लिखूंगा तेरे लिए,
तू मीठा लाना, मेरे लिए
मैं गजरे लाऊँ तेरे लिए,
इन दिनों को खास बनाये चल
एक प्यार का दीप जलायें चल
अपनी बढ़ती उम्र को हम
कुछ और खास बनाये चल
चल दूर कहीं चले जाएँ चल,
चल फिर से जी ले बो पल

# दिल दिमाग़ की कहानी..

कैसा है ये मंजर
दिल की सुनूं या दिमाग़ की
दिल कहे, बो दिमाग़ नहीं मानता
दिमाग़ के फॉर्मूले दिल नहीं जानता।
होता है ऐसा कभी
दिल रोता है
दिमाग़ समझाता है
ना समझूँ मैं कौन सच्चा
कौन झूठा है।
दिल ने किये ऐसे ऐसे  फैसले
जो लगे थे मुझे करिश्मे
जब बात दिमाग़ की आयी
तो लुट गयी जिंदगानी
हम सोचते ही रह गए
लोग उल्लू बना के छोड़ गए
अब भी समझ ना आयी
दिल दिमाग़ की कहानी..............॥

# बो दिन आज भी याद आये.

तूने मुझे जिंदगी दे दी,, तुझी से है मेरी सारी खुशी
तेरा बो धीमे से मुस्कुराना
मेरे पास आकर, मीठा सा गाना, गाना
तेरे सपनो में मैं खो जाती, तेरी बांहों में मैं सो जाती।
मेरे बालों में गजरा लगाना, मेरे माथे को चूम के जाना
तूने बादे सभी थे निभाए, बो दिन आज भी याद आये।
बढ़ चली है उमर, थम सी गयी है डगर
सपना सा लगता है अब, ये जिंदगी का सफर।
भाग्यशाली थी मैं, पाके, तुझ सा हमसफ़र।
तेरे लिए मन मेरा, आज भी मुस्काये
बो दिन आज भी याद आये..........।।
गर मौका मिला तो बता जायेंगे,
तेरे प्यार के नगमे गाएंगे,
तू नहीं है अब, तो क्या हुआ
तेरी यादों के सहारे जीवन बिताएंगे।।
गर तरस आ गया, खुदा को हम पर
तो बहुत जल्दी तेरे पास आएंगे........
तेरी यादों का समुन्दर मेरे जीवन में लहराए
बो दिन आज भी याद आये............मीठी याद...........।।

# उसके बिना हम कुछ नहीं.......

बिना उसके ये जहाँ कुछ नहीं,
बिना उसके इंसा कुछ नहीं।
वो है तो जहाँ है, वो है तो इंसा है,
फिर उसका अस्तित्व कहाँ है।
वो इतनी अनमोल है, फिर भी उसका मोल नहीं।
उसी से हम हैं, ,फिर वो हममे क्यों नहीं।
कहीं माँ तो कहीं बहन तो बेटी है कहीं
वो जीवन है हमारा, उसके बिना हम कुछ नहीं..................।
वो होठों की मुस्कान है,हम सबकी वो पहचान है,
वो है आधार हमारे जीवन का, करती सबका कल्याण है।
कहीं माँ बनके दुलारे, कहीं बहन बनकर फटकारे,
तो कहीं बेटी बन घर सम्हाले
वो हर किरदार निभाए, हर मोड़ पर वो मुस्काये,
हां हम उसी से हैं
ये बात फिर क्यों समझ ना आए।
हर कदम पे वो साथी बनी,
वो डरती भी कभी नहीं।
ये सोच लो मेरे यारों सब,
उसके बिना हम कुछ नहीं................ ।

# वो चला गया

ना मैंने सोचा ऐसा कभी,
तू मुझको इतना रुलायेगा
मेरी मुस्कान का जरिया तू,
मुस्कान मेरी ले जायेगा
दिन ढलता गया, शाम आने लगी
दिल मुझसे मेरा कहता रहा,
वो जा रहा है छोड़कर,
फिर वापस कभी ना आएगा
दिल की ना सुनी, मन की ना सुनी,
उस दिन को कैसे भूलूँ अब
जब बाट मैं तेरी निहार रही।।
जब आया तू था पास मेरे
मैं ठगी ठगी सी रह गयी
क्या कर डाला तूने पगले
ना सोचा एक बार मुझे......
अखियाँ बरसी नैना तरसे
घर पूरा शोक में डूब गया,
एक बार सोचता ऐ पगले
मेरा क्या होगा तेरे बिना
चला गया यूँ छोड़कर,
मुझको बेगानी दुनिया में......

# दिन ढलते गए

बो दिन, आज भी याद आता है
दिल मेरा सहम जाता है
थी खुशियाँ मेरे चहुँ ओर
आए बादल, दुख के घनघोर
दिन एक पल में बदल गया
खुशियाँ चकनाचूर हुई, मैं भी तुझसे दूर हुई।
नैना बरसने लगे
एक बड़ा सा हृदय घात हुआ
मन को बहुत आघात हुआ
तूने कैसे दिए मुझे ,आघातों पर आघात बड़े,
दिन ढलते गए, दिन ढलते गए
ना नजरें फिर मेरी फिरी,
ना तूने कुछ महसूस किया
अब बचा नहीं कुछ कहने को
घर तो तूने ये छोड़ दिया।
एक बार तो सोच लिया होता
तू क्या था मेरे जीवन में,
मैं माँ थी तेरी ऐ पगले।
तू क्या जाने दर्द मेरा,
मैं रोज निहारूं बाट तेरी
बापस आ जा मेरा लाडला ,माँ .....।।

# शैतान

ऊपर से मासूम, अंदर से शैतान
ऐसा ही है कुछ, आज का इंसान
मासूमियत दिखाए, बो ऐसे मुस्कराये
जैसे हो बो, अच्छाई की दुकान
वार करे पीछे से, सामने साथ निभाए
बो अपनों में छुपा है, मैं धूडूं सारा जहान
ऐसा ही है कुछ, आज का इंसान
है पैसे की कीमत, इंसानियत परेशान
सच्चाई लुट गयी, रूतबे की शान
साजिसों के बीच, धर्म कुर्बान
अपने ले रहे, अपनों की जान
ऐसा ही है कुछ, आज का इंसान
ना मान की फ़िक्र, ना कोई सम्मान
सब नशे में पड़े हैं, सोच! खुद को महान
उपासना में लीन, माने पैसे को भगवान
सत्य को अब श्राप समझें, मिथ्या को बरदान
ऐसा ही है कुछ, आज का इंसान

# बचपन कितना प्यारा था

जब छोटे थे,
तो बड़े होने की चाहत थी,
अब बड़े हो गए तो समझा,
बो बचपन कितना प्यारा था।
ना कोई टेंशन ना कोई चिंता
बस स्कूल ही जाना था
यारों के थे हम यार
दुश्मनी का ना जमाना था
अब याद आते हैं बो दिन
बो बचपन कितना प्यारा था।
ना लोगों की चिंता थी
ना डर था किसी का
हर जगह अपने दिखते थे
हर गली अपना घर था
आँखों में आंसू आ जाते हैं,
बचपन फिर घूम जाता है
जब याद आते हैं वो दिन
बो बचपन कितना प्यारा था।

# क्या खोया क्या पाया

सोचती हूँ कभी बैठकर
क्या है जिंदगी का मंजर
क्या पाया मैंने यहाँ आकर
या क्या खो देती, यहाँ ना आकर
सुना है जिंदगी खूबसूरत होती है
मृत्यु बहुत है भयंकर
फिर भी लौटकर नहीं आया कोई
मृत्यु को छोड़कर....
कुछ तो ख़ास होगा
जो मृत्यु के पास होगा
बरना खूबसूरत जिंदगी को यूँ छोड़कर
हमेशा मृत्यु के पास, ना रहेगा कोई
काश समझ पाती
ये दुनियां का भभंडर
अजीब है ये जीवन मृत्यु का मंजर
पार करना चाहती हूँ
ये जिंदगी का समंदर.........

# चलो कुछ पल जी लेते हैं................

चलो कुछ लिख लेते है
चलो कुछ सीख लेते हैं
चलो थोड़ा हंस लेते हैं
चलो कुछ पल जी लेते हैं.....
चलो कुछ पल जी लेते हैं......
हम रोते तो शायद हर दिन हैं
दुख तो हमेशा संग है
चलो आज मुस्कुरा लेते हैं
चलो कुछ पल जी लेते हैं..........
बैसे तो जिंदगी भाग्य के सहारे है
पर कुछ तो उसूल हमारे हैं
भाग्य रुलाता रहे, जितना वो चाहता है
पर हम भी खिलाड़ी पुराने हैं।।
हम दुख में भी मुस्कुराते हैं,
गमों को अपना साथी बना लेते हैं
चलो कुछ पल जी लेते हैं.............
क्यूँ हर बक़्त सोचे की क्या होगा
जो होगा जैसे होगा,
पर तजुर्बा तो नया होगा

चलो इस तजुर्बे को अपनाते हैं
जीवन के पलों को सहेज लेते हैं
चलो कुछ पल जी लेते हैं..........
चलो कुछ पल जी लेते हैं
हम हैं इतने बाबले
छोटी छोटी बातों पर होते हैं उताबले
इन छोटी छोटी खुशियों को,
चलो आज सहेज लेते हैं
चलो कुछ पल जी लेते हैं

# मुझे मनाना नहीं आता

प्यार करती हूँ बहुत
पर जताना नहीं आता
मुझसे यूँ रूठा ना करो
मुझे मनाना नहीं आता
बैसे तो जान भी दे दूँ तुम्हारे लिए
पर शब्दों में बताना नहीं आता
मुझसे यूँ रूठा ना करो
मुझे मनाना नहीं आता....
तुम्हारी हर मुस्कान लाजमी है
तुम्हारी हर खुशी में मेरी खुशी है
तुम जो रो दो तो
मेरी जान निकल जाती है
तुम्हारा एक आंसू, मुझे दरिया सा लगता है
तुम गुस्सा कर लिया करो भले ही
बस मुझसे यूँ रूठा ना करो
मुझे मनाना नहीं आता है।

# तोड़ जंजीरे मिटा सब फासले.......

छोड़ दे तू सोचना, बस कर्म करता चल
आज ना मिला तो, कल तो मिलेगा फल
तोड़ जंजीरे, मिटा सब फासले
उड़ जा आसमां में पंख खोल कर
कल कल कह के समय ना बर्बाद कर
आज करना है अभी ये सोच ले
तोड़ जंजीरे मिटा सब फासले........
आये अगर रोड़ा तेरे रास्ते
तू तोड़ दे उसको ठोकर मारकर
पहुंच अपनी मंजिल को, तू छू ले
तोड़ जंजीरे मिटा सब फासले........

मन को स्थिर रख इच्छाएं त्याग दे
लक्ष अपने जीवन का तू साध ले
आने ना देना रुकावट किसी हाल में
नाम करके दिखा सारे जहान में
लक्ष अपने जीवन का तू साध ले
तोड़ जंजीरे मिटा सब फासले..........

# राज सबके यहाँ गहरे हैं......

चेहरों पर चेहरे लगे हैं,
राज सबके यहाँ गहरे हैं
तू सोच मत की तू अनजान है
यहाँ हर पल निगाहों के पहरे हैं
तू क्या समझता है, दुनियां के नज़ारे
तुझे तो सब लगते हैं प्यारे,
तू खुद को कर ले किनारे
नहीं, पछताना भाग्य में तेरे है
राज सबके यहाँ गहरे हैं......
राज सबके यहाँ गहरे हैं.....
हर हँसते चेहरे खुश नहीं हैं
अँधेरे में शायद तुम भी और हम भी हैं
हर कोई उजाला कर दे
ये भी तो मुमकिन नहीं है
तू मान सबको अपना,
पर सब अपनें भी तो नहीं हैं..
चेहरों पर चेहरे लगे हैं.......
राज सबके यहाँ गहरे हैं।।

# कैसे बयां ना करुं उन पलों को.....

लोग अक्सर मुझे कहते हैं
क्यूँ बयां करती हो, तुम गमों को
कभी खुशियाँ भी बयां किया करो
अब कैसे बताऊँ उन लोगों को
रिस्ता जिससे नजदीक का है
कैसे बयां ना करुं उन पलों को.....
कैसे बयां ना करुं उन पलों को.......
खुशियाँ तो दूर की मेहमान हैं
गम हमेशा से मेहरबान हैं
कई किस्से हैं जिंदगी के
जो मिल जाते हैं किसी ना किसी मोड़ पर
हर मोड़ पर मिली हूँ गमों को
कैसे बयां ना करुं उन पलों को.......
कैसे बयां ना करुं उन पलों को.......
मुस्कुराते हुए भी आंसू छिपाये हैं
हमने अपनें दर्द किसी को ना बताये हैं
घूंट पीकर रह गए आसुओं के
तिनके के बहाने, कई बार बनाये हैं
अब कैसे संभालू अपनें दिल को
कैसे बयां ना करुं उन पलों को......

# मृत्यु कब से मुझे बुला रही है.......

ऐ जिंदगी क्या समझाना चाह रही है
कुछ बताती भी नहीं बस,
नये किस्से दिखा रही है
क्या कुछ खास है, जो सिर्फ तेरे पास है
बरना क्यों ठहरू तेरे पास
मृत्यु कब से मुझे बुला रही है........
उसके पास शांति है, सुकून है
तू तो बस रुलाये जा रही है
क्या खुशियाँ, हैं भी तेरे पास
या यूँ ही सपने सजा रही है
वरना मैं चली उसकी गोद में
मृत्यु कब से मुझे बुला रही है.......

# मैं हर दिन चोट खा रही हूँ

मां तुझे पता है, मैं हर दिन चोट खा रही हूँ
घुट रही हूँ अंदर ही अंदर,
फिर भी मुस्कुरा रही हूँ
मां क्या सच में,
बोझ सिर्फ हम बेटियां ही होते हैं
उस बिगड़े नबाब का क्या मां
जिसके हाथों तूने सौंप दिया मुझे,
माँ पता है, बो हर दिन ताने मारता है
मेरी आत्मा को हर दिन झकझोरता है
मां मैं फिर भी जी रही हूँ
मां मैं हर दिन चोट खा रही हूँ.......
कभी कभी मन करता है

चली जाऊं कहीं दूर इस जंजाल से
जहाँ कोई अपना ना मिले
और दूर रहूं सबकी चाल से
मां पता है, मैं ये भी नहीं कर पा रही हूँ
मां मैं हर दिन चोट खा रही हूँ......।।

# एक बार पूछ कर तो देखो

अपना घर चलाने को, घर ही छोड़ दिया
अपने बचपन के दोस्तों से मुँह मोड़ लिया
जो कभी पानी भी खुद से ना पिए
उसने खाना बनाना भी सीख लिया
फिर भी लोग कहते हैं
तूने अपनी जिंदगी में क्या किया.....
याद उनको भी आता है माँ के हाथ का खाना
याद उनको भी आता है
बो पुराना बाला याराना
उसने फिर भी मुस्कुराना सीख लिया
फिर भी लोग कहते हैं
तूने अपनी जिंदगी में क्या किया.....
संघर्ष सिर्फ बेटियां ही नहीं करती

बेटों से पूछ कर देखो
उसने क्या क्या खो दिया....
फिर भी लोग कहते हैं
तूने अपनी जिंदगी में क्या किया....

# मैं इतनी अजीब क्यों हूँ

बहुत कुछ करना चाहती हूं
पर कर नहीं पाती हूं
बहुत कुछ कहना चाहती हूं
पर कह नहीं पाती हूं
बहुत ज्यादा हंसना चाहती हूं
पर हंस नहीं पाती हूं
पता नहीं मैं ही इतनी अजीब क्यों हूं ,
लोग चाहे कुछ भी कह ले
मैं कुछ कह नहीं पाती
मैं जवाब देना चाहती हूं
पर चुप हो जाती हूं
मेरे मन में इतने सवाल हैं
जैसे अनगिनत तारे आसमान के
पर जवाब में सिर्फ शून्य ही पाती हूं
पता नहीं सिर्फ मेरा जीवन ही ऐसा है
या सबका, यही सोचती हूं
पता नहीं मैं ही इतनी अजीब क्यों हूं

# क्या मेरी पहचान है

आज तक ना जान पाई
क्या मेरी पहचान है
जान सबकी जान है
फिर प्राणी क्यूँ अनजान है
सबकी खातिर आज भी
मेरी खुशी कुर्बान है
जिसने जब चाहा
ढाला मुझे उस ओर है
जिंदगी भले मेरी हो
पर मेरा कुछ ना जोर है।
पापा की इज्जत बनी
साहस बनी मैं ,भाई का
बहना को प्यार दिया मैंने
बस बनी दुलार मेरी माई का।
कर दिया बिदा मुझे
कह के तू पराई है
ससुराल में ताने सुने
तू पराये घर से आई है।

जानना बस चाहूँ इतना,

है, मेरे त्याग का मोल कहाँ

या कहूँ अपने बारे में

मैं लड़की हूं, बस यही मेरी पहचान है।

# कोशिश की होती तो शायद

कितना अजीब लगता है ना
जब अपनें दोस्तों को, बड़े दिनों बाद मिलते हैं
जब पता लगता है की जब हम
नौकरी की तलाश में घूम रहे थे
बो तब अपनें उँचाइओं की सीढ़ी ढूंढ रहे थे..
हम संभाल रहे थे जिम्मेदारी अपनों की
बो जीवन की खुशियाँ ढूंढ रहे थे.
हमने शायद ताने भी सुने थे,
बो कहाँ पहुंच गया, तू कहाँ है
हर दिन यही सोच रहे थे
की शायद हम भी कुछ अच्छा कर सकते थे
यही सोच कर दिन कट गए.
हम नहीं कर पाए
की कोशिश की होती तो शायद
हम भी कर सकते थे.........
हर किसी ने ये तो सुना होगा
हर किसी ने ये तो सहा होगा
जरूर किसी ना किसी ने तो कहाँ होगा

कुछ नहीं कर पाया जीवन में

ये सोच कर कभी ना कभी तो रोया होगा....

की काश कोशिश की होती तो शायद

हम भी कर सकते थे......

# तू कभी न डरना

तुझे लाख मिलेंगे डराने बाले
पर तू कभी ना डरना
ना करना बहस किसी से,
बस मुस्कुराते हुए आगे बढ़ना
जिंदगी में मोड़ चाहें जैसा भी हो
हर मोड़ पर तू सीखने की चाह रखना
तुझे लाख मिलेंगे डराने बाले
पर तू कभी ना डरना ...........
परेशानियाँ आये जीवन में चाहें जितनी
हम हर बार कोशिश करेंगे उतनी
गर सफल ना भी हुआ तो क्या हुआ

तजुर्बा कुछ नया मिला है, ये सोच कर खुश होना
तुझे लाख मिलेंगे डराने बाले
पर तू कभी ना डरना ...........
हर पग पर काटें बिछे हैं
हर दिन मिलेंगी चुनौतियाँ
गर सीखना है तो सीख प्रकृति से
काँटों में रहकर फूलों का खिलना
देने सबको किरण, सूरज का स्वयं जलना
अब बढ़ चल आगे पीछे कभी ना मुड़ना
तुझे लाख मिलेंगे डराने बाले
पर तू कभी ना डरना.........

# मैं पल पल बिखर रही हूँ

मैं पल पल बिखर रही हूँ,
मुझे समेटने  की कोशिश न कर
मैं खुद मे टूट रही हूँ,
मुझे जोड़ने की कोशिश न कर।।
हंस कर त्याग दूँ ये जिंदगी
मैंने उस हद तक गम देखे हैं
मैंने दुसमनो की कतार मे सिर्फ अपने देखे है
मैं इस कदर उलझी हुई हूँ
मुझे सुलझाने की कोशिश  न कर
मैं खुद को खुद न समझ पाई
मुझे समझने की कोशिश न कर।।

# क्या सच मे बो समझ पाया

उसने कहा हजार दफा , जी जान से ज्यादा चाहता है मुझे
जिंदगी हूँ उसकी हर बार जताया मुझे
एक सवाल मेरे मन में भी आया
क्या सच मे बो मुझे समझ पाया
मेरे हसने की बजह तो बहुत बार पूछी
पर क्या मेरी चुप्पी कभी समझ पाया
मेरी पूरी जिंदगी सिर्फ उसी से जुड़ी थी
मेरी पूरी खुसियाँ बस उसी पर टिकी थी
उसने डाटा मुझे की बार हाथ भी उठाया
फिर चिंता भी जताई
ये बात आज तक न समझ आई
न माँ ने बताई न बहन ने सिखाई
बस ये चिंता उसकी आज तक समझ न आई
इतना दिखाबा बो कैसे कर पाया
क्या सच मे बो समझ पाया।।

# बो आगन हो गया पराया

बो आगन हो गया पराया
जहां खेली कूदी बड़ी हुई,
आज बो आगन हो गया पराया ।।
जिस के साथ बिताया बचपन,
जिस के साथ झगड़ती थी लड़ती थी
जिसके साथ हँसती थी रोती थी
जो सिर्फ मेरे अपने थे,
आज उनके लिए मेहमान बन गई
आज घर मेरा, मायका बन गया
मैं ढूंढती हूँ बो गलिया, बो सखिया
बो गलिया भी अब पराई लगती हैं
बो गाँव भी अब बन गया पराया ।।

# उसने जख्म इतने गहरे दिए

उसने जख्म इतने गहरे दिए
जुल्म इतने सारे किए
बो दर्द देता गया
मैं सहती रही
मैं अंदर ही अंदर रोती रही
सबने दिलाशा यही दिया
ये तो किस्मत का लेखा है
हर बार मुझे समझा दिया
पर किसी ने न ऐसा कहा
उठा कदम और छीन ले अपना हक
सहारा नहीं चाहिए था मुझे
पर अपनापन तो मिलता मुझे
ऐ नारी तू खुद ही खुद मे काफी
तू उठा कदम , तोड़ सारे बंधन
और अपने फैसले खुद ले ले ॥

# क्या सारे नियम बस मेरे लिए

मैं कैसे कहूँ और किस्से कहूँ
क्या महसूस कर रही हूँ
कैसे अंदर ही अंदर जल रही हूँ मैं
घूंट पी रही हूँ हर जुल्म का,
अपनी बारी का इंतजार कर रही हूँ मैं ।।
ये सच है कोई समझता नहीं किसी को
बिन समझे भी सवाल सिर्फ मुझी पर उठे हैं ।।
इतने सवाल है मेरे इस जमाने से
कोई समझाएगा मुझे,
ये नियम कानून सिर्फ मेरे लिए ही क्यों
गलत न होते हुए भी
हर बार गलत ठहराई गई हूँ मैं ।।

# मैं थी तो आज भी बंदिनी

मुझे ये तो पता है
की तुम राजा थे अपनी माँ के,
क्या तुम्हें कभी नहीं लगा
शायद मैं भी दुलारी थी
ये सच है बंधन जुड़ा है तुमसे मेरा
पर क्या मैं सिर्फ तुम्हारी बंदिनी थी
जब जैसे, जहां मेरे जीवन को ढाला गया
मैं बैसे ही खुशी खुशी जीती रही
पहले पिता ने किए सारे फैसले
पर तुम से आशा कुछ और ही थी
पर उफ़्फ़ ये भाग्य, मैं थी तो आज भी बंदिनी
मैंने हर उस बंदिश को अपना माना

जो तुमने मुझ पर लगाई थी
पर तुम्हें क्या कभी महसूस नहीं हुआ
मैं भी खुल कर जीना चाहती थी ॥

# काश तुमने मुझे समझा होता

काश तुम भी मेरी उतनी इज्जत करते
जितनी तुम मुझसे चाहते थे,
मैंने अपना सब कुछ छोड़ दिया
पर तुमने भी मेरा दिल तोड़ दिया ॥
मैं बोझ तो थी अपने माँ बाप पर
पर तुमने भी मुझे बोझ ही समझा
मेरा विश्वाश, मेरा बजूद सब खत्म
पर आज आँशु नहीं निकले
पता है क्यों, मेरी माँ ने बताया
की यही तो किस्मत है हर औरत की
काश तुमने इसे सच न बनाया होता ॥

# उजाड़ने वाले तो अपने है

गिला परायों से करूं भी तो क्या
आँशु लाने वाले तो अपने हैं
लगी आग जिंदगी मे ऐसी
बुझाए बुझे न संभाले, संभले न
आग बुझती भी तो कैसे
आग लगाने वाले तो अपने हैं
यूं तो हम मुस्कराते बहुत हैं
महफिलों मे ठट्टे लगाते बहुत हैं
मजाल है एक शिकन तक आए चहरे पर
किसे क्या पता अंदर ही अंदर टूटे बहुत हैं
ये मसले बताए भी तो कैसे
खुशियां उजाड़ने वाले भी तो अपने हैं

# मैंने भी एक सपना देखा था

खुली आखों से एक सपना देखा था
खुले आसमान मे उड़ने का
संग किताबों के खेलने का
चाहती थी किताबों को अपना मित्र बनाना
पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था
जब पढ़ने की उम्र थी
तो हाथ पीले कर दिए
कुछ यूं शब्द सुने क्या करेगी पढ़कर
कौन बनाएगा कलेक्टर इसको
फूकना तो किसी के घर का चूल्हा था
एक फूल सी बच्ची न जाने कब
एक बहु बन गई किसी के आंगन की
था सपने जिसका आसमान मे उड़ने का
आज घूघट उसको छुपा बैठा था

# मैं बस तेरे प्रेम की दीवानी हूँ

मैंने पूड़ी पकवान नहीं मांगे
मैं सुखी रोटी की दीवानी हूँ,
मैंने कभी महगे तोहफे नहीं मांगे
मैं सस्ती कुल्फी की दीवानी हूँ ।।
कभी नहीं मांगा तुझसे ज्यादा कुछ
मैं बस इज्जत की दीवानी हूँ,
मैंने अपना घर छोड़ दिया तेरे लिए
मैं बस अपनेपन की दीवानी हूँ
तू मुस्करा कर मीठे बोल, बोल दे
मैं बस तेरे प्रेम की दीवानी हूँ ।।

# क्या करूं

जब कुछ समझ न आए
जब सब कुछ खतम सा लगने लगे
तो क्या करूं?
जब हसने की कोई बजह न हो
और आखों के आँसू सूख चुके हों
जब जिंदगी का कोई मकसद न हो
तो क्या करूँ ?
जब आशाएं खतम हो चुकी हो
पर निराशा भी न पाना चाहू
तो क्या करूं?

# क्यों इस तरह मैं चुप रह जाती हूँ

क्यों इस तरह मैं चुप रह जाती हूँ
मुझे पता है की मैं सही हूँ,
फिर भी कुछ न कह पाती हूँ
अंदर ही अंदर घुट जाती हूँ,
क्यों इस तरह मैं चुप रह जाती हूँ
होते हैं जमाने मे लोग सौ तरह के
कुछ अपने कुछ पराए कुछ होते हैं मुखौटे
मैं सबको अपने जैसे मान लेती हूँ
इस दुनिया के जंजाल को क्यों नहीं समझ पाती हूँ
क्यों इस तरह मैं चुप रह जाती हूँ
ये मेरा खुद ही खुद से सवाल है
क्या है ये दुनिया क्यों इतना जंजाल है
क्यों दुनिया मे सब सिर्फ पाने की चाह रखते हैं
मैं पागल सी सबकी खुसी मे खुश हो लेती हूँ
क्यों इस तरह मैं चुप रह जाती हूँ ॥

# हर कोई अच्छे की तलाश में है

हर कोई अच्छे की तलाश मे है
पर कोई खुद अच्छा बनना नहीं चाहता
हर कोई ईमानदारी ढूंढ रहा है
पर खुद ईमानदार बनना नहीं चाहता
हर कोई खुशियां ढूंढ रहा है
पर कोई खुशियां बाटना नहीं चाहता
हर कोई हर किसी में अपनापन ढूंढ रहा है
पर कोई अपना बनना नहीं चाहता
हर कोई समझाने की कोशिश कर रहा है
पर कोई समझना नहीं चाहता
ऐसा क्यों?

# “क्यों”

तेरे हिस्से पूरी स्वतंत्रा तेरी
मेरे हिस्से आधी क्यों
तेरे हिस्से तेरी पूरी जिंदगी
मेरे हिस्से मेरी आधी भी नहीं, क्यों
तू जिए अपनी जिंदगी, जैसे तू चाहे
मेरे हिस्से ही इतने सवाल जबाब क्यों
तेरे फैसले सिर्फ तेरे
मेरे फैसले सिर्फ मेरे नहीं क्यों
तेरे हिस्से तेरी पूरी खुशी
मेरे हिस्से ही गम क्यों
तेरा घर पूरा तेरा
मेरा ससुराल मायका क्यों
कभी समय मिले तो सोचना जरूर
तुझमे सिर्फ तू है ,मैं सिर्फ मैं नहीं क्यों?

# थोड़ा थोड़ा मुस्कराते हैं

सुना है खुशियां बाटने से बढ़ती हैं
तो क्यों न थोड़ा थोड़ा मुस्कुराया जाए
थोड़ा गम तेरा थोड़ा गम मेरा
क्यों न इस गम को ,थोड़ा थोड़ा करके भुलाया जाए
आज चलो मैथ का नियम अपनाया जाए
खुशियों को करो गुणा, और गमों को घटाया जाए
थोड़ा तेरा, थोड़ा मेरा कुछ इस तरह से भाग किया जाए
अगर जोड़ सको औरों को तो और भी अच्छा हो जाए
सुना है खुशियां बाटने से बढ़ती हैं
तो क्यों न थोड़ा थोड़ा मुस्कराया जाए ॥

धन्यवाद आपने पूरी पुस्तक पढ़ ली अगर आपके मन मे भी कुछ सवाल उठे हैं या कुछ लिखने का मन कर रहा है कुछ कहने का मन कर रहा है

तो उठाइए कलम और लिख डालिए जो मन मे आ रहा है

कौन क्या सोचेगा ये सोचना आपका काम नहीं है आपको अपने आप ही अपना खयाल रखना

पड़ेगा कोई और नहीं आएगा आपका खयाल रखने के लिए ,

तो लिखिए जो मन करे,बस खुश रहिए मुसकुराते रहिए,

धन्यवाद

लेखक से जुड़ने के लिए :

Author Social Media

Instagram: @neha_ki_kalam

Email: nchaudhary9759@gmail.com